IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

कवि शिशुपाल सिंह ''शिशु'' के काव्य में प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक दर्शन।

डॉ. भावना सिंह भदौरिया
(एम.ए. पी.एच.डी. नेट, स्लेट)
सहायक प्राध्यापक, शास. महाविद्यालय, बानमौर, मुरैन

कवि शिशुपाल सिंह ''शिशु'' हिन्दी काव्य जगत में एक नक्षत्र की तरह चमकने वाले कवि थे। ''शिशु'' जी का जन्म उदी इटावा (उ.प्र.) में हुआ था। जिसका उनके काव्यों पर बहुत प्रभाव पड़ा। ''शिशु'' जी ने अपने काव्यों में प्राकृतिक चित्रण को विशेष महत्व दिया तथा जीवन में होने वाली सभी क्रिया कलापों को उन्होंने प्रकृति से जोड़कर उसे जीवतता प्रदान की। कवि ने प्रायः अपने काव्यों में यमुना–चंबल आँचल के बीहड़ो का अद्‌भुत वर्णन किया है तथा अपने काव्यों में प्रकृति के अनुपम दृश्यों का सजीव चित्रण किया है। ''शिशु'' जी का मानना था कि मनुष्य के लिये प्रकृति सबसे बडी धरोहर है जिसे सहेज कर रखना प्रत्येक मनुष्य की जिम्मेदारी है ताकि इसका लाभ आने वाली पीढ़ियों को मिल सके। कवि अपने काव्य के माध्यम से प्रकृति को संभालकर एवं सजोंकर रखने की बात अपने श्रोताओं तक पहुंचाना चाहते थें

कवि शिशुपाल सिंह ''शिशु'' जी के अधिकतर काव्य राष्ट्रीय धारा से प्रेरित थे जो अधिकतर अंग्रेजों के शासन काल के समय लिखे गये परन्तु एक कवि होने के नाते उनका अन्य कवियों के समान प्राकृतिक एवं आध्यात्म से लगाव अधिक था जिससे प्रेरित होकर उन्होंने अपनी रचना 'नदिया किनारे' जो कि कविताओं का संग्रह है लिखी। 'नदिया किनारे' काव्य में कवि ने प्रकृति के सौन्दर्य का अभूतपूर्व चित्रण किया है तथा कवि के शब्दों का विधान देखते ही बनता है। इस काव्य में कवि ने शान्त, वीर, श्रृंगार एवं भयानक रस का प्रयोग किया है।

'नदिया किनारे' काव्य में कहीं कहीं कवि ने भाषा में खड़ी–बोली, पारिभाषिक और समसामायिक शब्दों का प्रयोग किया है एवं देशज व तद्‌भव शब्दों का सहज रूप से प्रयोग किया है। कवि ने मनुष्य को प्रकृति से जोड़कर उसे प्रेरणा श्रोत माना है।

देखो दिवाकर नित्य डूबता
अपने मन से नहीं डूबता
प्रातः काल पुनः लाता है अपने विमल प्रकाश
कुसुम! तुम क्यों हो आज उदास।

''शिशु'' जी ने मनुष्य के जीवन को सूर्य के समान माना है। जिस तरह मनुष्य के जीवन में यदि असफलता रूपी अन्धकार विद्‌यमान होगा तब उसे धैर्य से अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिये कठिन परिश्रम एवं अपने पर विश्वास रखना पड़ेगा। असफलता के बाद सफलता सूर्य अस्त के बाद सूर्य उदय के समान है उदासी त्याग कर सफलता की ओर प्रयास सदैव करते रहने चाहिये।

''शिशु'' जी प्रायः चंबल नदी के तट पर आया–जाया करते थे तथा नदी के तट पर होने वाली गतिविधियों को कवि ने अपनी कविता में जीवतंता का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। नदी के तट पर होने वाले क्रियाकलापों का विवरण करते हुए लिखा है कि –

वहाँ भोले सारस के जोड़े मिलेंगे
जगत की जो चिन्ताएं छोड़ मिलेंगे
अवनि और नभ के दुबीचे में पड़कर
तुम्हें ऐसे निश्चित थोड़े मिलेंगे
रसिकता के गुण होंगे सिकता में सारे
चलों घूम आये नदी के किनारे।

''शिशु'' जी की इन पंक्तियों में नदी के तट के क्रियाकलापों का सजीव चित्रण करते हुए कहते हैं कि नदी के तट पर जाकर मनुष्य के मन को सारस के भांति शांति, एकाग्रचिता और जीवन में रसिकता के अनुभव की प्राप्ति होगी यानि उसके मन

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

को नदी के तट पर जाकर जीवन की आपा–धापी के बीच शांति प्राप्त होगी तथा जीवन में नई ऊर्जा का संचार होगा। कवि ने रूढ़ी वादी प्रथाओं पर कटाक्ष करते हुए उन अहंकारी लोगों को वृक्ष के समान बताया है जो अपने घमंड में जीते हैं तो एक दिन नदी का बहाव रूपी जल सैलाव उनके घमंड को चूर–चूर कर देता है तथा घमण्ड रूपी उनका विशालकाय वृक्ष रूपी अहंकार नदी के बहाव रूपी जल सैलाव के सामने बह जाता है यानि खत्म हो जाता है। जिसका चित्रण कवि ने निम्न पंक्तियों के माध्यम से किया है–

एक वृक्ष, कल इसी कूल पर गर्वित शीश उठाये था
प्रौढ़, परिस्थिति कर लेने को गहरी जड़े जमाए था
अपने ढंग अनगिनत दल लेकर
अति ऊँची शाखाओं से
अखिल गगन के हथियाने का अपने पर फैलाये था
आज समूल उखड़कर जल में
गिर कर बहता चला गया
पानी ही फिर गया घमंडी के आयोजन सारे पर
खड़े ने हो चढ़ती नदिया के करते हुए कगारे पर।

''शिशु'' जी के काव्यों में संतदर्शन के चित्रण एवं प्रसाद गुण का अत्यधिक प्रभाव मिलता है। कवि के काव्यों में आध्यात्मिकता का बोध स्वामी शरणानन्द जी के विचारों से मिलता है। ''शिशु'' जी राष्ट्रीय काव्यधारा के कवि थे परन्तु स्वामी जी के सानिध्य में कवि के काव्यों में आध्यात्मिकता का भाव स्पष्ट देखा जा सकता है। चाहे वो प्रभु की भक्ति हो या रिश्तों की वास्तविकता, तत्कालीन परिस्थितियाँ हो या मनुष्य के जीवन की व्यथा हर जगह कवि ने आध्यात्म का अच्छा समावेश अपनी काव्य रचनाओं में किया है। आध्यात्म का निराला वर्णन करते हुए कवि लिखते हैं –

संयम नियम पूर्णातः पालो
अपने को सब भांति संभालों
कही मेनका भृष्ट न कर दे जय मय चारू चरित्र
अरे हो मन के विश्वामित्र

उपरोक्त पंक्तियों में कवि ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा है कि यदि मनुष्य अपने मन पर संयम पा लेता है तथा शाश्वत आध्यात्मिक नियमों को अपनाता है तो पद भृष्ट करने वाली मेनका जैसी संगत भी उसे पद भृष्ट नहीं कर सकती है। इसलिए मन को विश्वामित्र के भांति चंचल नहीं होना चाहिए चाहे कैसी भी परिस्थिति हो मनुष्य को सद्मार्ग पर चलना चाहिए। यों तो कवि ने अधिकतर काव्य परतंत्र भारत के समय के है जिस समय अंग्रेजों का शासनकाल था तथा देशवासियों पर अंग्रेजों द्वारा क्रूरता की सीमाए लांघी जा रही थी तथा उनकी आवाज उठाने वाले क्रांतिकारियों को जेल में बन्द कर यातनाएं दी जा रही थी।

कवि ने ऐसी परिस्थितियों से दुःखी होकर भारत माता को स्वतंत्र कराने के लिए श्री कृष्ण से आह्वान करते हैं –

कितने ही वसुदेव जटिल जेलों में पड़े हुए हैं
जीवन ओर मृत्यु वाले खेलों में पड़े हुए हैं
बंधी देवकी सी बन्धन में दुःखिया भारत माता
मुक्ति लोक का द्वार दिखाते आओ कृष्ण कन्हैया।

''शिशु'' जी की उपरोक्त पंक्तियों में कवि की चिन्तनशीलता और राष्ट्रीयता की भावना में आध्यात्मिक चित्रण उच्च कोटि का है। कवि जीवन का जुड़ाव गाँव व किसान से रहा। परतंत्र भारत के समय में किसान की आय का साधन मात्र खेती हुआ करती थी तथा खेतों में पानी के लिए उसे वर्षा पर निर्भर होना पड़ता था कभी वर्षा सामान्य होती तो कभी वर्षा सामान्य से कम होती थी। ऐसी स्थिति से प्रभावित एवं करूणा के भावों के साथ कवि ने निम्न पंक्तियों में घनश्याम (श्री कृष्ण) से आग्रह करते हुए किसानों की पीड़ा को दूर करने का आग्रह करते हुए लिखा है –

कितने हैं सूखे क्षेत्र यहाँ
कितने हैं गीले नेत्र वहाँ

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

यह बात बिना आये भगवान। किस भांति समझ तुम पाओगे
घन श्याम। इधर कब आओगे।

निम्न पंक्तियों में कवि ने वर्षा ऋतु के समय पर न आने से होने वाली परेशानियों का वर्णन करते हुए भक्ति से भाव विभोर होकर भगवान को किसानों की पीड़ा से मुक्ति दिलाने का आह्वान किया है।

''शिशु'' जी ने प्रगतिवाद को भी आध्यात्म के विचारों से सराबोर किया था निम्न पंक्तियों के माध्यम से कवि अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं –

सदा रहेगा पंच–तत्व का ऐसा ही ताना बाना
सदा रहेगा जीवन–पथ में ऐसा ही आना जाना
जननि। धैर्य धर, देह बदलने की केवल देरी होगी
पुनर्जन्म को पाकर मुझ से फिर सेवा तेरी होगी।

उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने आध्यात्मिक भावनाओं से प्रेरित होकर मनुष्य के पंच तत्वों के शरीर को जो कि नश्वर है जो कि जीवन पथ पर अपनों का साथ छोड़ जाता है। यही जीवन चक्र है आना जाना लगा रहता है परन्तु मनुष्य को अपने इस जीवन रूपी पथ पर मातृभूमि की सेवा ही जीवन का प्रमुख उद्देश्य एवं कर्तव्य होना चाहिये। जीवन के हर पल को मातृभूमि के लिए समर्पित करना चाहिये ताकि यदि पुनर्जन्म मिले तो अधूरे उद्देश्यों एवं कर्तव्यों को पूर्ण किया जा सके। कवि ने जीवन में होने वाले उतार–चढ़ाव का वर्णन निम्न पंक्तियों में किया है।

दुःख के आ जाने पर तू रह रह कर अकुलता है
हाँ, सुख के आ जाने पर पल–पल में पुलकाता है
दुःख का अतिथि कदापि न तुझसे
हाँ! आदर पाता है
किन्तु मित्र सुख का भी तुझको तज कर हट जाता है
यों तू दुख का मिलन और
सुख का न विरह सहता है
सहले कुछ क्षण का जीवन है सहना ही कितना है
जग में रहना ही कितना है।

उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने जीवन में होने वाली आपा–धापी का बढ़ा ही सजीव चित्रण किया है क्योंकि मनुष्य जिन बातों से दुःखी होता है वह पल भर की होती हैं क्योंकि जीवन ही कुछ पल का होता है। मनुष्य को व्यर्थ की चिंताओं में और अपेक्षाओं में अपने आप को दुःखी और खुश महसूस करता है वास्तव में यह नियति का विधान है जो होना है वो होकर ही रहता है हम केवल साधन मात्र है। इसी व्याकुल मन की अभिलाषा की पूर्ति में जीवन सारा बिता देते हैं जो भी यहाँ पाते हैं वो भी यहीं छोड़कर जाना है जीवन की यर्थाथता को भूल मनुष्य जीवन के कटू सत्य को भुला देता है। ''शिशु'' जी प्रायः अपने काव्यों में श्री कृष्ण का चित्रण करते थे क्योंकि उन्हें अपना आराध्य देव मानते थे। काव्यों के हर रूपों में उनकी कृष्ण भक्ति समाहित थी। चाहे व राष्ट्रीय काव्य धारा से प्रभावित काव्य हो, प्रकृति से प्रेरित काव्य, जीवन की जीवन्तता से प्रेरित काव्यों में कृष्ण भक्ति तथा आध्यात्मिकता प्रदर्शित होती है।

शांति बन जाते हो समाधि मंदिरों की, कहीं,
मंदिरों की आरती का शोर बन जाते, हो।
ध्यान करने से कहीं ध्यान में न आते कहीं
भक्त मुख चन्द्र के चकोर बन जाते, हो।
'शिशु' पूजा जाप से पिघलते नहीं हो, कहीं
प्रेम से ही प्रणय विभोर बन जाते, हो।
कहीं भोले बन आप ही तो लुट जाते, कहीं
चित्त को चुरा के चित्त चोर बन जाते हो।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

सन्दर्भ

[1]. नदिया किनारे, शिशुपाल सिंह ''शिशु'' (1947), हैदराबादः मारबाडी नवयुवक मण्डल नवयुवक मण्डल।

[2]. 'शिशु' स्मृति गन्ध (2000), इटावा, शिशु स्मारक समिति इटावा (उ.प्र.)